सलाहकार समिति

प्रो. कुलदीप चंद अग्निहोत्री ,उपाध्यक्ष,हरियाणा साहित्य एवं संस्कृति अकादमी, पंचकूला
प्रो. कुमुद शर्मा, कुलपति महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा महाराष्ट्र
प्रो. सरस्वती भल्ला, हिमाचल प्रदेश विश्वविद्यालय शिमला
प्रो. बाबूराम, बाबा मस्तनाथ विश्वविद्यालय, रोहतक
प्रो. नरेंद्र मिश्र, इंदिरा गांधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय, दिल्ली
प्रो. वीरपाल सिंह यादव, हरियाणा केंद्रीय विश्वविद्यालय, महेंद्रगढ़
प्रो. प्रीति सागर, महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा, महाराष्ट्र
प्रो. चंद्रकांत ,हिमाचल प्रदेश केंद्रीय विश्वविद्यालय, हिमाचल प्रदेश
प्रो. प्रमोद तिवारी,संयुक्त निदेशक मुक्त शिक्षा परिसर, नई दिल्ली
प्रो. अंजनी कुमार श्रीवास्तव, महात्मा गाँधी केंद्रीय विश्वविद्यालय, मोतिहारी, बिहार
प्रो. सुनील शर्मा, गुरुनानक देव विश्वविद्यालय अमृतसर
प्रो. तेजसिंह, वाणिज्य विभाग, इंदिरा गांधी विश्वविद्यालय मीरपुर, रेवाड़ी
प्रो. रोमिका बत्रा, अंग्रेजी विभाग, इंदिरा गांधी विश्वविद्यालय मीरपुर, रेवाड़ी
प्रो. कर्ण सिंह, रसायन शास्त्र विभाग, इंदिरा गांधी विश्वविद्यालय मीरपुर, रेवाड़ी
प्रो. सत्येंद्र बल ,संगणक एवं अभियांत्रिकी विभाग, इंदिरा गांधी विश्वविद्यालय मीरपुर, रेवाड़ी
प्रो. रश्मि पुंडीर, रसायन शास्त्र विभाग, इंदिरा गांधी विश्वविद्यालय मीरपुर, रेवाड़ी
प्रो. विकास बत्रा, अर्थशास्त्र विभाग, इंदिरा गांधी विश्वविद्यालय मीरपुर, रेवाड़ी
प्रो. पंकज कुमार त्यागी, प्राणी विज्ञान विभाग, इंदिरा गांधी विश्वविद्यालय मीरपुर, रेवाड़ी
प्रो दीपक,अधिष्ठाता कॉलेज, इंदिरा गांधी विश्वविद्यालय मीरपुर, रेवाड़ी

संगोष्ठी का उद्देश्य

इस संगोष्ठी का मुख्य उद्देश्य नई शिक्षा नीति (NEP) के आलोक में भारतीय शिक्षा की प्राचीन परंपराओं, संस्कृतियों और सामाजिक मूल्यों को पुनर्जीवित करना है। यह संगोष्ठी छात्रों के चरित्र निर्माण और उन्हें भारतीय संस्कृति व जीवन मूल्यों के प्रति जागरूक करने की दिशा में एक सशक्त माध्यम सिद्ध होगी।

नई शिक्षा नीति (NEP 2020) के अनुरूप, यह संगोष्ठी भारतीय ज्ञान परंपरा (IKS) के उन सूत्रों को खोजने का प्रयास है जो आज के पर्यावरणीय संकट का समाधान दे सकते हैं। रामचरितमानस की मर्यादा हो या वेदों का पृथ्वी सूक्त, भारतीय मनीषा ने सदैव प्रकृति को 'माता' माना है। यह संगोष्ठी साहित्य, विज्ञान और वाणिज्य के शोधार्थियों को एक मंच प्रदान करती है।

"माता भूमिः पुत्रोऽहं पृथिव्याः" (पृथ्वी मेरी माता है और मैं उसका पुत्र हूँ) – अथर्ववेद का यह उद्घोष मात्र एक सूक्त नहीं, बल्कि भारतीय जीवन-दर्शन का आधार स्तंभ है। आज जब संपूर्ण विश्व 'जलवायु परिवर्तन' (Climate Change) और 'ग्लोबल वार्मिंग' जैसी गंभीर चुनौतियों से जूझ रहा है, तब समाधान की खोज हमें पुनः अपनी प्राचीन ज्ञान परंपरा की ओर मुड़ने को प्रेरित करती है।

भारतीय संस्कृति में प्रकृति को 'उपभोग' की वस्तु नहीं, बल्कि 'अध्यात्म' और 'सह-अस्तित्व' का केंद्र माना गया है। ।

विश्वविद्यालय परिचय

ग्रामीण अंचल में लगभग 100 एकड़ भूमि में प्रकृति की गोद में बसा (स्थापित) इन्दिरा गाँधी विश्वविद्यालय मीरपुर,रेवाड़ी (हरियाणा) 12 वर्षों से अधिक शिक्षा के क्षेत्र में अग्रणी है। यह विश्वविद्यालय अधिनियम 2013 के तहत स्थापित है। यहां लगभग 14 संकायों के अन्तर्गत स्नातक, स्नातकोत्तर, पीएच.डी. आदि कार्यक्रम प्रदान किये जाते हैं। विश्वविद्यालय का मूल उद्देश्य छात्र/छात्राओं को गुणवत्तापरक शिक्षा देना, शोध कार्य को बढ़ावा देना तथा श्रेष्ठ नागरिकों का निर्माण करना है। वस्तुतः श्रेष्ठ शिक्षा की बुनियाद श्रेष्ठ शोध, विश्लेषणात्मक, संरचनात्मक प्रक्रियाओं पर होती है। इसी संदर्भ में शैक्षणिक सत्र 2025-26 में मानविकी संकाय के अन्तर्गत हिंदी-विभाग एक दिवसीय बहु-विषयक राष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन कर रहा है।

हिंदी-विभाग

कला, मानविकी एवं सामाजिक विज्ञान संकाय में हिंदी विभाग के माध्यम से विविध कार्यक्रम आयोजित किए जाते हैं। हिंदी विभाग भारतीय ज्ञान परंपरा एवं राष्ट्रीय शिक्षा नीति के अनुरूप साहित्य के रोजगारोन्मुखी और कौशलपरक पाठ्यक्रम संचालित कर रहा है। इसके अंतर्गत रचनात्मक लेखन, पटकथा लेखन, मीडिया लेखन, अनुवाद तथा प्रयोजनमूलक हिंदी के माध्यम से विद्यार्थियों को रोजगारोन्मुखी शिक्षण प्रदान किया जाता है। विभाग द्वारा विद्यार्थियों के लिए निरंतर विभिन्न प्रतियोगिताएँ, विस्तार व्याख्यान, कार्यशालाएँ तथा राष्ट्रीय संगोष्ठियों का आयोजन किया जाता है।

इंदिरा गांधी विश्वविद्यालय मीरपुर, रेवाड़ी

हिंदी विभाग द्वारा आयोजित

एक दिवसीय बहुविषयक राष्ट्रीय संगोष्ठी (हाइब्रिड मोड़)

विषय : भारतीय ज्ञान परम्परा और पर्यावरण चिंतन

दिनांक : 24 फरवरी 2026 (मंगलवार)

स्थान: इंदिरा गांधी विश्वविद्यालय मीरपुर, रेवाड़ी (हरियाणा)

समिति एवं पदाधिकारी

मुख्य-संरक्षक
प्रो० असीम मिगलानी
माननीय कुलपति
इंदिरा गांधी
विश्वविद्यालय
मीरपुर, रेवाड़ी

संरक्षक
प्रो०दिलबाग सिंह
कुलसचिव
इंदिरा गांधी
विश्वविद्यालय
मीरपुर ,रेवाड़ी

संरक्षक
प्रो०सुनील कुमार
अधिष्ठाता
शैक्षणिक मामले
इन्दिरा गांधी
विश्वविद्यालय
मीरपुर,रेवाड़ी

निदेशक
प्रो० निखिलेश यादव
अधिष्ठाता
मानविकी संकाय
इंदिरा गांधी
विश्वविद्यालय
मीरपुर, रेवाड़ी

संयोजिका
डॉ० मंजु पुरी
अध्यक्ष, हिंदी विभाग
इंदिरा गांधी विश्वविद्यालय
मीरपुर, रेवाड़ी

सह-संयोजक
डॉ० शकुंतला
हिंदी विभाग
इंदिरा गांधी विश्वविद्यालय
मीरपुर, रेवाड़ी

सह-संयोजक
डॉ० जागीर नागर
हिंदी विभाग
इंदिरा गांधी विश्वविद्यालय
मीरपुर, रेवाड़ी

ऋग्वेद से लेकर उपनिषदों तक, हमारे ऋषियों ने 'ऋत' (Cosmic Order) की अवधारणा प्रस्तुत की, जो सिखाती है कि ब्रह्मांड का प्रत्येक कण एक प्राकृतिक नियम से बंधा है। यदि हम इस संतुलन को छेड़ते हैं, तो उसका परिणाम वैश्विक संकट के रूप में सामने आता है।इस संगोष्ठी का आयोजन केवल अकादमिक चर्चा के लिए नहीं, बल्कि उन विस्मृत मूल्यों को पुनर्जीवित करने के लिए किया जा रहा है, जहाँ नदियाँ केवल जल का स्रोत नहीं, बल्कि जीवनदायिनी 'माँ' हैं। वृक्ष केवल लकड़ी नहीं, बल्कि देवताओं के निवास और ऑक्सीजन के अक्षय भंडार हैं। जीवन शैली लालच पर नहीं, बल्कि 'तेन त्यक्तेन भुंजीथा' (त्याग पूर्वक भोग) पर आधारित है। इस संगोष्ठी का मूल उद्देश्य आधुनिक विज्ञान के साथ मिलकर भारतीय ज्ञान परंपरा के उन सूत्रों को खोजना है, जो आगामी पीढ़ियों के लिए एक सुरक्षित और हरित भविष्य सुनिश्चित कर सकें। आइए, हम सब मिलकर इस पारिस्थितिकी चिंतन के माध्यम से 'सर्वे भवन्तु सुखिनः' के स्वप्न को साकार करने का संकल्प लें।

संगोष्ठी के विचारणीय उपविषय इस प्रकार होंगे-

1. भारतीय ज्ञान परंपरा की समकालीन प्रासंगिकता
2. वेद, उपनिषद और दर्शन में पर्यावरण चेतना
3. पुराण, भगवद्गीता, रामायण एवं महाभारत में पर्यावरण चेतना
4. भारतीय ज्ञान परंपरा का वर्तमान परिप्रेक्ष्य में पर्यावरण, शांति एवं सतत् विकास में योगदान
5. भारतीय ज्ञान परंपरा एवं भक्ति साहित्य में पर्यावरण चिंतन
6. कथा साहित्य, हिंदी कविता, उपन्यास, नाट्य एवं कथेतर साहित्य में पर्यावरण चिंतन
7. भारतीय ज्ञान परंपरा : पर्यावरण, योग एवं वैश्विक चिंतन
8. भारतीय ज्ञान परंपरा : प्राकृतिक चिकित्सा एवं आयुर्वेद
9. भारतीय ज्ञान परंपरा और प्रकृति के साथ सह-अस्तित्व
10. भारतीय ज्ञान परंपरा : पर्यावरण चिंतन और भारतीय सिनेमा
11. वैदिक वाङ्मय में पर्यावरण चेतना : पृथ्वी सूक्त के विशेष संदर्भ में
12. भारतीय लोक पर्व और प्रकृति संरक्षण : हरियाणा के लोक गीतों एवं परंपराओं का अध्ययन
13. रामचरितमानस में प्रकृति-चित्रण : एक पारिस्थितिकीय (Ecological) विश्लेषण
14. NEP 2020 और पर्यावरण साक्षरता: प्राथमिक से उच्च शिक्षा तक प्रकृति बोध का एकीकरण।
15. भारतीय ज्ञान परंपरा और 'लाइफस्टाइल फॉर एनवायरनमेंट' (LiFE): वैश्विक संकटों का भारतीय समाधान।
16. लोक कलाओं में प्रकृति पूजा: मांडणा, मधुबनी और चौक-पूर्णा जैसी परंपराओं में पारिस्थितिकी।
17. मंदिर स्थापत्य और जल प्रबंधन: भारत के प्राचीन मंदिरों की बावड़ी और तालाब संरक्षण तकनीकें।
18. रामकथा की वैश्विक यात्रा: विभिन्न संस्कृतियों में राम के 'मर्यादा' और ' प्रकृति प्रेम' के आदर्श।
19. प्राचीन भारतीय विमानिकी एवं खगोल विज्ञान: पर्यावरण के अनुकूल ऊर्जा स्रोतों की खोज।
20. प्राकृतिक जड़ी-बूटियों का औषधीय एवं आर्थिक महत्व।
21. डिजिटल इंडिया और पेपरलेस वर्क कल्चर: पर्यावरण संरक्षण की दिशा में एक आधुनिक कदम।
22. भारतीय संविधान और पर्यावरण संरक्षण: मौलिक कर्तव्यों (Article 51A) के आलोक में नागरिक भूमिका।
23. ईको-मार्केटिंग और उपभोक्तावाद: 'भोग' के स्थान पर 'त्याग' की भारतीय अवधारणा।
24. NEP 2020: शिक्षा के माध्यम से पर्यावरण मूल्यों का बीजारोपण।
25. लोक जीवन और पर्यावरण: हरियाणा की लोक-संस्कृति और प्राकृतिक उत्सव।
26. योगिक जीवन पद्धति: आंतरिक शांति और बाह्य पर्यावरण का संतुलन।
27. वनस्पति एवं जीव विज्ञान: जैव-विविधता संरक्षण की भारतीय पद्धतियां।
28. कंप्यूटर विज्ञान: हरित तकनीकी (Green Tech) और ई-कचरा प्रबंधन।
29. पर्यावरण समाजशास्त्र : सामुदायिक भागीदारी और जल संरक्षण की परंपराएं।
30. राजनीति विज्ञान और वैश्विक नीतियां: पर्यावरण न्याय और भारत की भूमिका।
31. भूगोल और जीआईएस (GIS): क्षेत्रीय विकास और पारिस्थितिकीय मानचित्रण।
32. ग्रीन बिजनेस: वाणिज्य में सतत् विकास (Sustainable Development) के सूत्र।
33. होटल प्रबंधन: ईको-टूरिज्म और शून्य अपशिष्ट (Zero Waste) की अवधारणा।

- उपरोक्त उपविषयों के अतिरिक्त मुख्य विषय से सम्बन्धित अन्य किसी शोध विषय पर भी शोध आलेख प्रस्तुत किया जा सकता है।

*शोधपत्र (Research Paper): स्वरूप एवं निर्देश

- पूर्ण शोधपत्र की शब्द-सीमा 3000-4000 शब्द निर्धारित है।
- शोधपत्र में शोध का उद्देश्य, शोध-विधि, प्रमुख निष्कर्ष एवं उपसंहार स्पष्ट रूप से अंकित हों।
- संदर्भ-लेखन APA शैली के अनुसार होना चाहिए।
- शोधपत्र संस्कृत, हिन्दी अथवा अंग्रेज़ी भाषा में स्वीकार्य हैं।
- हिन्दी/संस्कृत हेतु Unicode Mangal (12 pt.) तथा अंग्रेज़ी हेतु Times New Roman (12 pt.) फ़ॉन्ट प्रयोग किया जाए।
- शोधपत्र MS Word, 1.15 लाइन स्पेसिंग में प्रस्तुत किया जाए।
- चयनित श्रेष्ठ शोधपत्र ISBN युक्त संपादित पुस्तक में प्रकाशित करने की योजना है।जिसके लिए पुस्तक छपने पर अलग से देय होगा

महत्त्वपूर्ण तिथियाँ

- **पूर्ण शोधपत्र भेजने की अन्तिम तिथि: 22 फरवरी, 2026**
- **पंजीकरण की अन्तिम तिथि: 23 फरवरी, 2026**

पंजीकरण एवं शुल्क विवरण

पंजीकरण लिंक:

Google Form Link
https://forms.gle/Xdr4HXaZF9w5EMcV9

सहभागिता राशि:

शोधार्थी/विद्यार्थी : ₹400/-
शिक्षक: ₹500/-

शुल्क हेतु लिंक: Fee Payment Link

संपर्क

Research Paper Submission
Email:
hindiseminar2026igu@gmail.co
(सभी शोधपत्र इसी ई-मेल पर भेजे जाएँ)

Whatsapp group link
https://chat.whatsapp.com/Gs558fnjQSD3Sw2aU7Drdt

संपर्क सूत्र (संगोष्ठी, पंजीकरण एवं शोधपत्र सम्बन्धी जानकारी हेतु):
डॉ. शकुंतला - 7015950298
डॉ. जागीर नागर - 9671242990
डॉ. अर्चना यादव - 9416343568

।।ऋषियों की यही है वाणी।।
।।अनमोल है धरा और पानी।।